अंबाजोगाई-महा.। राजयोगिनी ब्र.कु.सुनिता को 'नवकेशर नवरत्न अवॉर्ड 2017' से सम्मानित करते हुए डॉ. भरत जेठवाणी, जिला कांग्रेस अध्यक्ष राजकिशोर मोदी, नगराध्यक्ष रचना मोदी, नगर सेवक डॉ. इंगोले, डॉ. धाकड़े, मानव लोक प्रमुख अनिकेत लोहिया और नवकेशर प्रतिष्ठान अध्यक्ष भिमाशंकर शिंदे।

भिलाई-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए महापौर चन्द्रकान्ता माण्डले, सभापति विजय जैन, ब्र.कु. अंजली तथा अन्य।

दल्ली राजहरा-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में डॉ. डी.लोहारा, विधायिका अनिला मेड़िया, नगर पालिका अध्यक्ष निषाद जी, ब्र.कु. पूर्णिमा तथा अन्य।

जबलपुर-विजय नगर। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए महापौर डॉ. स्वाति गोडबोले, पार्षद ममता तिवारी व सुषमा पटेल, पूर्व पार्षद पप्पू चौकसे, डॉ. लखन भाई, ब्र.कु. भूमि तथा अन्य।

राँची-चौधरी बगान। 'दीपावली आध्यात्मिक रहस्य' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए दिनेश पटेल,मृदा संरक्षण विभाग, संजय सिंह,पतंजली प्रमुख, लाल गिरिजा शंकर नाथ शाहदेव,सी.सी.डी.सी.,राँची वि.वि., ब्र.कु. निर्मला, सीमा शर्मा,भाजपा सदस्य व एन.सी.एल. निदेशक, आरती कुजूर, बाल संरक्षण आयोग अध्यक्ष तथा अन्य।

कलानौर-हरियाणा। आई.टी.आई. में प्रशासक वर्ग के कार्यक्रम के पश्चात् स्टाफ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रजनी, ब्र.कु.दर्शना, ब्र.कु. प्रेम।

मानस रोग का इलाज कर दुर्गुणों से बचें

वैसे तो सभी सभ्य लोग चाहते हैं कि दुर्गुणों का हमला परिवारों पर सीधा न हो। अत: घर की चारदीवारी में कुछ सुरक्षा रखते हैं। घर के सदस्य आचरण से न गिर जाएं और ऐसा काम घर में न करें, जो उनके संस्कार और परम्पराओं से मेल नहीं खाता हो। इसे लेकर सभी सजग रहते हैं, लेकिन इसे समझना होगा। मौजूदा माहौल में जो लोग चाहते हों कि बाहर के दुर्गुण घर में न आएं तो उन्हें इन बातों पर काम करना चाहिए। सम्बंध खराब होते हैं एक-दूसरे की निंदा और केवल शरीर पर टिकने के कारण। शास्त्रों में कुछ बीमारियाँ बताई हैं, जिन्हें मानस रोग कहा गया है। बाहर के रोगों की तरह मनुष्य के भीतर भी रोग होते हैं, जिनका इलाज उसे खुद ही करना है। मोह को सारे रोगों का कारण बताया गया है। उसके बाद काम, क्रोध और लोभ को रोग कहा है। आयुर्वेद के हिसाब से वात, पित्त और कफ बीमारियों के कारण हैं। वात मतलब वायु। काम को वायु, पित्त यानी एसीडीटी को क्रोध और कफ को लोभ कहा है। इन बीमारियों के रहते हम घर का वातावरण अच्छा रख ही नहीं सकते। नतीजे में सदस्य तनावग्रस्त होंगे, एक-दूसरे पर आक्रमण करेंगे, एक-दूसरे की निंदा करेंगे और धीरे-धीरे परिवार टूटने लगेंगे। यदि एक साथ रहेंगे भी, तो एक-दूसरे को बोझ मानेंगे, इसलिए परिवार बचाना हो, तो दुर्गुणों से बचिए और उसके लिए मानस रोग का इलाज खुद करें। योग, सत्संग वो दवाएं हैं जो असर भले ही धीरे करें पर परिवार बचाने में बड़े काम की हैं।

स्थूल से शक्तिशाली सूक्ष्म

मन का क्वांटम रूप

★ पृथ्वी स्थूल है। पृथ्वी से जल सूक्ष्म है। जल से अग्नि सूक्ष्म है। अग्नि से वायु सूक्ष्म है। वायु से सूक्ष्म आकाश है। आकाश में चुम्बकीय शक्ति, विद्युत शक्ति और ईथर जैसी महान सूक्ष्म शक्तियाँ हैं।

★ बर्फ स्थूल है। पानी बर्फ से सूक्ष्म है। पानी से सूक्ष्म भाप है। भाप से सूक्ष्म हाइड्रोजन व ऑक्सीजन है। हाइड्रोजन से जब हाइड्रोजन बम बनाया जाता है तो वह महा शक्तिशाली होता है, जिससे आज सारा संसार विनाश के कगार पर खड़ा है।

★ शरीर और हड्डियाँ मन का स्थूल रूप हैं। नस नाड़ियाँ शरीर से सूक्ष्म हैं। नस नाड़ियों से कोशिकायें सूक्ष्म होती हैं। कोशिकाओं से सूक्ष्म खून होता है। खून से सूक्ष्म ओज होता है। ओज से सूक्ष्म संकल्प होता है। संकल्प दिखता नहीं परंतु बहुत शक्तिशाली है ।

★ हमारे दिमाग में ऐसी सूक्ष्म मशीनरी है जो किसी भी जीव व पदार्थ को देखते ही उसे अणु में बदल देता है। मान लो हम मेज को देखते हैं, तो देखते ही मन उसे छोटे से छोटा बनाना शुरू कर देता है। उसका एक ग्राम बना देता है। फिर उस ग्राम के एक लाख टुकड़े कर देता है। इस लाखवें टुकड़े को अणु कहते हैं।

★ हमारा मन इस अणु को फिर एक करोड़ हिस्सों में बाँट देता है। यह जो करोड़वाँ अंश है, यही प्रकृति का सबसे छोटा रूप है। इसे क्वांटम कहते हैं। यही संकल्प का सूक्ष्म रूप है। हमारे अन्दर जो भी अच्छे बुरे संकल्प चल रहे हैं, वह सब इतने सूक्ष्म हैं।

★ क्वांटम लेवल पर संकल्प में जो विद्युत बल है, जो चुम्बकीय शक्ति है, जो प्रकाश है, उन सब का भी इतना सूक्ष्मतम रुप है।

★ यहीं पर आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का मिलन स्थान है। यहीं पर तीनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यहीं पर तीनों का एक-दूसरे पर असर होता है।

★ इस क्वांटम लेवल पर जा कर हम पहचानते हैं कि यह मेज है। यह फलाना व्यक्ति है, घर है, गाड़ी है, स्कूटर है, रिक्शा है, फलाना बच्चा है, फलानी पुस्तक है, फलाना शब्द है और वहीं से मन रिवर्स चलता है और उन देखी गई चीजों को बड़ा बनाता जाता है और हम उसे मेज या अन्य कोई भी वस्तु

व व्यक्ति कह कर पुकारते हैं।

★ यह सारी प्रक्रिया पल भर में ही पूरी हो जाती है। यह कार्य दिमाग के विभिन्न भाग करते हैं।

★ हम हर विचार इस लेवल पर करते हैं। अर्थात् हम जो कुछ देखते हैं, करते हैं, सोचते हैं, बोलते हैं, चाहे अच्छा चाहे बुरा, इतनी गहराई पर जा कर ही सोचते हैं।

★ किसी चीज़ को उठाना हो तो इस क्वांटम लेवल पर मन प्रकृति की किसी चीज़ को उठाने का आदेश देता है, तब हम वह वस्तु उठाते हैं।

★ यही परमात्मा की फ्रिक्वेन्सी है। यहीं पर हर विचार ईथर तत्व में प्रवेश करता है व सारे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है।

★ संसार में जितने भी अच्छे व बुरे काम हो रहे हैं, वह सब इस क्वांटम लेवल से हो रहे हैं। संस्कार में जो चीज़ें हैं, वह इतनी गहराई पर पड़ी हुई हैं।

★ यहीं पर रोग पनपते हैं। हम जो दवाइयाँ खाते हैं, उनका इतना सूक्ष्म रूप बनता है, तब जाकर रोगों का इलाज होता है।

★ दवाइयाँ अर्थात् प्रकृति इतना सूक्ष्म रूप धारण करती है, जो आत्मा के सूक्ष्म कणों को शक्तिशाली बनाती है, जिससे हम तंदुरुस्त हो जाते हैं। दवाइयों का इतना सूक्ष्म रूप दिमाग के विभिन्न हिस्से बनाते हैं। इन हिस्सों को आत्मा ही निर्देश देती है।

★ जब बैटरी डिसचार्ज हो जाती है तो चार्जर से लगाने पर चार्जर की विद्युत बैटरी की छड़ों पर जमे कार्बन उतार देती है, जिससे बैटरी चार्ज हो जाती है।

★ ऐसे ही जब हम परमात्मा को याद करते हैं, तो इतने सूक्ष्म रूप में परमात्मा की तरंगों के सम्पर्क में आते हैं। परमात्मा की तरंगें हमारे मन की तरंगों से अशुद्धि निकाल देती है, अर्थात् आत्मा की कार्बन निकल जाती है और हम पावन बन जाते हैं।

★ हरेक व्यक्ति में विचार पैदा ही क्वांटम लेवल पर हो रहे हैं। ये सारा प्रोसेस पल भर में हो रहा है और प्रत्येक व्यक्ति में हो रहा है, जिसे कोई जानता नहीं। ये सब अनजाने में हो रहा है। इस स्तर पर हमें शोध करना है, तब साइलेन्स की साइन्स पर विजय होगी।

वरणगांव-महा.। स्काऊट गाईड के बच्चों को वैल्यू एज्युकेशन के बारे में बताने के पश्चात् समूह चित्र में कर्नल पी.जी. निंबाळकर, ब्र.कु. पदमा बहन तथा अन्य।